



Hargharpanditji

॥ श्री मोहिनी एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री मोहिनी एकादशी व्रत कथा ॥

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की मोहिनी एकादशी भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है। इस एकादशी का माहात्म्य भविष्योत्तर पुराण में वर्णित है। यह व्रत मोह, पाप, आसक्ति और अज्ञान का नाश करने वाला तथा मोक्ष प्रदान करने वाला माना गया है।

श्री मोहिनी एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? कृपया उसका माहात्म्य और व्रत कथा बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे धर्मराज! यह एकादशी 'मोहिनी एकादशी' कहलाती है। इसका माहात्म्य अत्यंत महान है। इसकी कथा महर्षि वशिष्ठ ने भगवान श्रीराम को सुनाई थी।"

त्रेतायुग में भद्रावती नाम की एक समृद्ध नगरी थी। वहाँ द्युतिमान नामक धर्मात्मा और सत्यनिष्ठ राजा राज्य करते थे। उसी नगर में धृष्टबुद्धि नाम का एक अत्यंत धनी वैश्य रहता था। उसके पाँच पुत्र थे, जिनमें सबसे छोटा पुत्र धृष्टबुद्धि (कुछ ग्रंथों में धनपाल का पुत्र धृष्टबुद्धि) अत्यंत दुराचारी था।

वह जुआ खेलता, मद्यपान करता, चोरी करता, परस्त्रीगमन करता और संतों तथा ब्राह्मणों का अपमान करता था। उसके दुष्कर्मों से दुखी होकर उसके पिता ने उसे घर से निकाल दिया।

घर से निकाले जाने के बाद भी उसने अपने दुर्गुण नहीं छोड़े। धन समाप्त होने पर वह चोरी और लूटपाट करने लगा। अंततः नगरवासियों ने उसे पकड़कर दंडित किया और नगर से भी निकाल दिया।

अब वह जंगल में रहने लगा और हिंसक पशुओं का शिकार करके अपना जीवन बिताने लगा। एक दिन भटकते-भटकते वह महर्षि कौण्डिन्य के आश्रम में पहुँच गया।

उस समय वैशाख मास चल रहा था। महर्षि कौण्डिन्य गंगा स्नान करके आश्रम लौट रहे थे। उनके भीगे हुए वस्त्रों से जल की कुछ बूँदें धृष्टबुद्धि के शरीर पर गिरीं। उन पवित्र जल-बिंदुओं के प्रभाव से उसके हृदय में पश्चाताप उत्पन्न हुआ।

वह ऋषि के चरणों में गिर पड़ा और बोला—

"हे गुरुदेव! मैंने जीवनभर अनेक पाप किए हैं। कृपा करके मुझे ऐसा उपाय बताइए जिससे मेरे सभी पाप नष्ट हो जाएँ।"

महर्षि कौण्डिन्य ने कहा—

"हे पुत्र! यदि तुम सच्चे हृदय से पश्चाताप करते हो, तो वैशाख शुक्ल पक्ष की मोहिनी एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत करो। भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा करो, रात्रि में जागरण करो और द्वादशी को विधिपूर्वक पारण करो।

इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे सभी पाप नष्ट हो जाएँगे।"

धृष्टबुद्धि ने ऋषि की आज्ञा का पालन किया। उसने पूर्ण श्रद्धा, नियम और भक्ति के साथ मोहिनी एकादशी का व्रत किया।

व्रत के पुण्य-प्रभाव से उसके जन्म-जन्मांतर के समस्त पाप नष्ट हो गए। मृत्यु के पश्चात वह दिव्य विमान में बैठकर भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ को प्राप्त हुआ।

तब भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे राजन्! मोहिनी एकादशी के समान पापों का नाश करने वाला दूसरा कोई व्रत नहीं है। जो श्रद्धा और भक्ति से इस एकादशी का पालन करता है, वह मोह, पाप और बंधनों से मुक्त होकर अंत में मेरे परम धाम को प्राप्त करता है।"

मोहिनी एकादशी का संदेश

सच्चा पश्चाताप और भगवान की शरण मनुष्य के जीवन को बदल सकते हैं।

चाहे व्यक्ति कितना भी पापी क्यों न हो, श्रद्धा और भक्ति से किया गया मोहिनी एकादशी व्रत उसे पापों से मुक्त कर सकता है।
भगवान विष्णु की कृपा से मोह, आसक्ति और अज्ञान का नाश होता है।
धर्म, संयम और सदाचार ही जीवन को सफल बनाते हैं।

मोहिनी एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु वैशाख शुक्ल पक्ष की मोहिनी एकादशी का व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु की उपासना करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, मानसिक मोह और भ्रम दूर होते हैं, सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है तथा अंत में उसे भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री मोहिनी एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥

HarGharPanditji

TRUA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR